शोध साहित्य SHODH SAHITYA
INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL
(समसामयिक विषयों पर केंद्रित बहुविषयक मासिक ई-शोध पत्रिका)
E-ISSN 2584-2447
Year -1 Vol -5 March 2024

वृन्दावनलाल वर्मा के उपन्यासों में बुन्देली लोक संस्कृति का चित्रण

नीरज गुप्ता
सह.प्राध्यापक - हिंदी विभाग
गोस्वामी तुलसीदास स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कर्वी, चित्रकूट (उ.प्र.)

शोध सार

नाटककार और उपन्यासकार वृंदावनलाल वर्मा का हिंदी इतिहास में एक महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उन्होंने झाँसी, ग्वालियर, बुंदेलखंड जैसे क्षेत्रों के इतिहास से सम्बंधित उपन्यास और नाटक लिखे है। आज भी उनकी उपन्यासें इतिहास पढ़ने और समझने का एक महत्वपूर्ण स्त्रोत हैं। इसके अलावा उन्होंने अपने सामाजिक उपन्यासों से सामाजिक मुद्दों को आगे लाने और विकृतियों को दूर करने का प्रयास भी किया। एक और ध्यान देने वाली बात ये है, कि उनके कथा साहित्य में नारियों को एक प्रमुख स्थान मिलता है जो नैतिकता, ईमानदारी और सच्चाई के साथ किया गया है। बुंदेलखड के जीवन संस्कृति और इतिहास का प्रामाणिक अध्ययन वृन्दावन लाल वर्मा के उपन्यासों में स्पष्ट रूप में देखा जा सकता है।

बीज शब्द

बुंदेलखंड, संस्कृति, प्रामाणिक, ऐतिहासिक, ग्रामीण, दस्तावेज।

भूमिका

इतिहास जब उपन्यासों में वर्णित होता है तो वह और अधिक रमणीय एवं आकर्षक बन जाता है। डा. वृन्दावन लाल वर्मा बुन्देलखण्ड के एक ऐसे मूर्धन्य ऐतिहासिक उपन्यासकार हैं जिनकी रचनाओं में ऐतिहासिक तथ्यों व कल्पनाशक्ति का सुभग संयोग देखने को मिलता है। वह इतिहास को जड़ आख्यान के बजाय वर्तमान जीवन का ठोस आधार मानते हैं। अतः उन्होने ऐतिहासिक पात्रों घटनाओं एवं परिस्थितियों को बगैर किसी लाँग- लपेट के बुन्देली अंदाज में अत्यंत सरल व रोचक ढंग से प्रस्तुत किया है। उनके उपन्यासों का उदेश्य मात्र मनोरंजन तक सीमित नही है बल्कि बुन्देलखण्ड की लोकसंस्कृति, इतिहास, भौगोलिक

विशिष्टताओं एवं राजनैतिक व सामाजिक पहलुओं को समग्रता में दर्शाना भी है वह अपने उपन्यासों में बुन्देलखण्ड के विस्मृतप्राय अतीत के अस्पष्ट व धुंधले हो चुके चित्रों को कल्पना की कूँची से यथार्थरूप में उकेरने में काफी हद तक सफल हुए। जिससे बुन्देली संस्कृति के गौरव को लोकप्रियता मिली। ऐसे में बुन्देलखण्ड की लोक संस्कृति व इतिहास के उद्घाटन में वर्मा जी के ऐतिहासिक उपन्यासों का सर्वेक्षण आवश्यक हो जाता है।

शोध विस्तार

बुन्देली भाषा में प्रयोग होने वाले शब्दों वाक्यों को यहाँ वृन्दावनलाल वर्मा के ऐतिहासिक उपन्यासों में उनके उपन्यासिक पात्रों की भाषा में जीवंत रूप में देखा जा सकता है। बुंदेलखंड के इतिहास और उससे जुड़े घटनाक्रम पर केन्द्रित उपन्यासों के ग्रामीण चरित्रों की भाषा वहाँ ठेठ बुन्देली है। बुंदेलखंड पर केन्द्रित अधिकांश उपन्यासों में बुन्देली लोक जीवन और बुन्देली लोक संस्कृति को उसके ऐतिहासिक सन्दर्भों के अनुकूल अभिव्यक्त किया गया है। वृन्दावन लाल वर्मा के ऐतिहासिक उपन्यास हिन्दी साहित्य और भारतीय समाज के लिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इन उपन्यासों में भारतीय समाज और राजनीति के साथ-साथ भारतीय संस्कृति को पुनः स्थापित करने की रचनात्मक कोशिश की गई है। अंग्रेजो ने जिस भारतीय इतिहास और संस्कृति का जो पराभव अपने दस्तावेजो में लिखा था, उसके विपरीत भारतीय संस्कृति और समाज को इन उपन्यासों में सही रूप में चित्रित किया गया हैं।

अपने साहित्यिक जीवन की शुरूआत 1909 में उन्होने 'सेनापति ऊदल' नामक नाटक सृजित कर के की। तत्कालीन अंग्रेज सरकार इसके मंचन से घबरा गई और नाटक जब्त कर लिया गया। तत्पश्चात 1920 तक उन्होंने छोटी-छोटी कहानियाँ लिखी। इसी बीच उन्होंने अंग्रेजी के ऐतिहासिक उपन्यासों का व्यापक अध्ययन भी किया। वाल्टर स्काट नामक अंग्रेजी उपन्यासकार का उन पर गहरा प्रभाव पड़ा। सन् 1927 में उन्होने अपने पहले ऐतिहासिक उपन्यास 'गढ़ कुण्डार' की रचना की। 1930 में उनका 'विराटा की पद्मिनी' नामक उपन्यास प्रकाशित हुआ। तत्पश्चात लंबे समय तक लेखन कार्य स्थगित रहा। 1942 में वर्मा जी के साहित्यिक जीवन की द्वितीय पारी की शुरुवात हुई। इस वर्ष 1946 में उनका सबसे लोकप्रिय उपन्यास 'झाँसी की रानी' प्रकाशित हुआ। तब से उनके लेखन की धार निरन्तर पैनी होती

चली गई। 1947 में उन्होंने 'कचनार' 1950 में 'मृगनयनी' 1954 में 'टूटे काटे, 1955 में 'अहिल्याबाई', 1957 में 'भुवन विक्रम' और 'माधवजी सिंधिया' आदि ऐतिहासिक उपन्यासों का प्रणयन किया। इन उपन्यासों के माध्यम से वह भावनात्मक पटभूमि पर बुंदेली लोकसंस्कृति व इतिहास को प्रतिष्ठित कर उसके पीछे निहित कथातत्व को सूत्रबद्ध करने में सफल हुए। अतः उनके इन उपन्यासों में इतिहास का वास्तविक रसास्वादन प्राप्त होता है।

बुंदेलखण्ड मध्य भारत का ऐसा भाग है जिसमें उत्तर प्रदेश व मध्य प्रदेश दोनों ही राज्यों के आंशिक क्षेत्र समाहित है। इसके अलग- अलग भागों में विद्यमान तमाम विविधताओं के बावजूद भौगोलिक,सामाजिक, सांस्कृतिक व ऐतिहासिक दृष्टि से यह विलक्षण एकबद्धता लिये हुये है। इसलिए इन्हें बुंदेलखण्ड के 'वाल्टर स्काट' की संज्ञा दी गई है। बुंदेलखंड के झाँसी जिले के मऊरानीपुर में जन्मे वृन्दावन लाल वर्मा हिन्दी के ऐसे ऐतिहासिक उपन्यासकार हैं जिन्होंने अपने उपन्यासों में बुंदेलखंड के इतिहास समाज और संस्कृति के साथ बुन्देली भाषा को नयी अभिव्यक्ति दी है। उनके अधिकांश उपन्यासों में अनेक पात्र ठेठ बुन्देली भाषा और बुन्देली संस्कृति में रचे-बसे हैं। उनका गढ़कुंडार, झाँसी की रानी, देवगढ़ की मुस्कान, कीचड़ और कमल, कचनार, मुसाहिब जू, आदि सभी उपन्यास बुन्देली लोक समाज एवं बुन्देली लोक संस्कृति के विभिन्न क्षेत्रों के राजनैतिक,सामाजिक और सांस्कृतिक सरोकारों पर केंद्रित हैं। बृहद बुंदेलखंड के विभिन्न क्षेत्रों के क्षेत्रीय राजाओं, सामंतों सहित छोटे राज्यों के राजनैतिक सामाजिक घटनाक्रम को वृन्दावन लाल वर्मा ने अपने उपन्यासों की विषयवस्तु का आधार बनाया है। बुंदेलखंड के जीवन संस्कृति रीति-रिवाज बुन्देली भाषा में प्रयोग होने वाले शब्दों वाक्यों को यहाँ वृन्दावनलाल वर्मा के ऐतिहासिक उपन्यासों में उनके उपन्यासिक पात्रों की भाषा में जीवंत रूप में देखा जा सकता है। बुंदेलखंड के इतिहास और उससे जुड़े घटनाक्रम पर केन्द्रित उपन्यासों के ग्रामीण चरित्रों की भाषा यहाँ ठेठ बुन्देली है। बुन्देली संस्कृति का वस्तु जगत यहाँ अपने मूल रूप में अर्थवान हो उठता है।

वृन्दावनलाल वर्मा के उपन्यासों में प्रयुक्त ऐतिहासिक स्थान, घटनाएं, मार्ग, राजाओं सामंतों जागीरदारों से जुड़े प्रसंग,चरित्र तथा नाम वास्तविक हैं। हम सब जानते है कि वृन्दावनलाल वर्मा के पूर्व हिन्दी उपन्यास जगत में बुंदेलखंड के महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाक्रम का कोई स्थान नहीं था मुगलों और अंग्रेजों की खिलाफ़त के कारण बुंदेलखंड को

अपनी पहचान के लिए कठिन संघर्ष करना पड़ा। उनके उपन्यासों में बुंदेलखण्ड की कला, संस्कृति, रीति-रिवाज, रहन-सहन, भेष-भूषा, भाषा, बोली, नदियों, जंगल, पहाड़, त्योहारों का सजीव चित्रांकन हुआ है। बुंदेली लोकगीत हो या भक्तिगीत, नागपंचमी, हरछठ, जवारों का मेला, होली, दिवाली जैसे तीज- त्योहार हो या फिर दुर्ग, किले, भवन, मन्दिर, वृदावनलाल वर्मा ने अपने उपन्यासों में बुंदेली अन्दाज में बुंदेलखण्ड की सम्पूर्ण संस्कृति का अत्यन्त सूक्ष्म व जीवन्त वर्णन किया है। अतः हम कह सकते है कि वह उपन्यास विधा के ऐसे वटवृक्ष है जिन्होने बुंदेली संस्कृति को अलग पहचान दिलायी।

1927 में वृन्दावनलाल वर्मा का पहला ऐतिहासिक उपन्यास 'गढकुण्डार' प्रकाशित हुआ। गढकुण्डार बुंदेलखण्ड का एक विलक्षण दुर्ग था। वर्मा जी ने इस उपन्यास में 'गढकुण्डार' की भौगोलिक, सांस्कृतिक व स्थापत्य सम्बन्धी विशिष्टताओं के साथ- साथ यहाँ 13वीं शताब्दी में हो रहे राजनीतिक उतार-चढ़ाव को भी इगिंत किया है। जिसे आज बुंदेलखण्ड कहते है प्राचीन काल में इसे जुझौती कहा जाता था । जुझौती के बेतवा, सिंध, केन द्वारा सिंचित गढ कुण्डार नामक विस्तृत भू-भाग पर खंगार वंश के शासक हुरमत सिंह का शासन था। खंगार पृथ्वीराज चौहान के सांमत थे। पृथ्वीराज चौहान ने चंदेल शासक परमर्दिदेव को पराजित कर खंगारो को यहाँ की सत्ता सौंप दी थी। खंगार वंश के इतिहास के साथ-साथ वर्मा जी ने इस उपन्यास में यहाँ की पहाड़ियों, नदियों, व मन्दिरों का भी विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया है।

1930 में वृन्दावनलाल वर्मा का 'विराटा की पद्मिनी' उपन्यास प्रकाशित हुआ। वर्मा जी के इस उपन्यास में इतिहास व लोकतत्व का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है। उन्होने इसकी रचना करते समय जनश्रुतियों एवं मौखिक परम्परा में सुरक्षित मान्यताओं के साथ-साथ विराटा, रामनगर और मुसावली की दस्तूरदेहियों को आधार बनाया। मुख्य कथानक झाँसी के पास स्थित एक रियासत के राजा-रानी की कथा पर आधारित है। ऐसा माना जाता है कि राजा नायक सिंह की शत्रुओं द्वारा हत्या के पश्चात् उसकी रानी पद्मिनी ने प्रण लिया कि जब तक हत्यारे जनार्दन सिंह का सिर काटकर उसके समक्ष नहीं लाया जाता वह अन्न-जल नही ग्रहण करेगी। वर्मा जी बखूबी पद्मिनी के शौर्य व इससे जुड़ी अन्य घटनाओं को अपने उपन्यास में प्रतिबिम्बित करने में सफल हुये।

वर्मा जी को उनके परिवार की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का भी लेखन में भरपूर लाभ मिला। उनके परदादा श्री आनन्दराय झाँसी के दीवान एवं मऊरानीपुर की सैन्य टुकड़ी के संचालक थे 1857 में रानी लक्ष्मीबाई की शहादत के बाद भी वह उत्साहपूवर्क छापामार रणपद्धति के जरिये अंग्रेजी सेना के दाँत खट्टे करते रहे। अन्ततः वहीं की पहाड़ियों में वह वीरगति को प्राप्त हो गये। इसी दौरान उनके दादा कन्हैयालाल को बन्दी बना लिया गया। उनकी परदादी ने रानी लक्ष्मीबाई के व्यक्तित्व व कार्यशैली को करीब से देखा था एवं उनसे कई बार वर्तालाप किया था। वर्मा जी बचपन से ही परदादी और दादी से रानी के वीरता के किस्से सुनते आये थे। उनके मन में सवाल था कि आखिरकार रानी स्वराज के लिये लड़ी या विवश होकर लड़ी थी इसी बात को हृदय में अंकुरित कर उन्होनें 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' उपन्यास का सृजन किया। इस उपन्यास में भारत में बुन्देलखण्ड के झाँसी जिले की कहानी जिसमें रानी लक्ष्मीबाई का अंग्रेजों से युद्ध, झाँसी के किले का चित्रण, सेनाओं का प्रबन्ध, राजाओं के परस्पर युद्धों का चित्रण और उसी सन्दर्भ में बुन्देलखण्ड का चित्रण मिलता है।

उपन्यास में वृन्दावनलाल वर्मा ने झाँसी शहर किस प्रकार बसा है, वहाँ के विभिन्न स्थलों, झाँसी के किले में स्थित तालाब, मन्दिर, सेना की तोपें, ओरछा आदि का भी विस्तार से वर्णन किया है। उस समय गंगाधर राव के शासन में प्रचलित मान्यताओं, प्रथाओं जैसे कि यज्ञोपवीत संस्कार, पगड़ी बँधवाने की प्रथा, विवाहों में दासियाँ देने की प्रथा आदि, विभिन्न जातियों, नृत्य-गायन में राजा की रुचि, रानी द्वारा स्त्रियों को शस्त्र चलाने की शिक्षा, पंचायतों एवं रीति-रिवाजों आदि का चित्रण किया गया है। कई बार वर्तालाप किया था। वर्मा जी बचपन से ही परदादी और दादी से रानी के वीरता के किस्से सुनते आये थे। उनके मन में सवाल था कि आखिरकार रानी स्वराज के लिये लड़ी या विवश होकर उन्हें अंग्रेजो से लड़ना पड़ा। इसी उहापोह में उन्होने समयकाल से पूर्व की घटनाओं, स्थलों व भौगोलिक विशिष्टताओं के सन्दर्भ में ऐतिहासिक तथ्यों की छानबीन की। अन्ततः इन्ही तथ्यों को आधार बना उन्होने 1946 में 'झाँसी की रानी' नामक लोकप्रिय उपन्यास की रचना की। उनके इस ऐतिहासिक उपन्यास में रानी व उनके सहयोगियों के वीरता के किस्से व त्याग को अत्यन्त मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया गया। रानी की गौरव गाथा के अतिरिक्त उन्होने झाँसी के किले, किले में स्थित 'कड़क बिजली' नामक तोप, शहर की सुरक्षा हेतु बनाये गये बड़े-बड़े फाटको, ओरछा, बरूआसागर, तालबेहट के किलो, मंदिरो, बागों आदि का बड़ी ही जीवन्तता से चित्रण

किया है। उपन्यास में आम प्रजा को बुंदेली बोली एवं राजसी लोगो को खड़ी बोली का प्रयोग करते हुये प्रदर्शित किया गया है।

वर्मा जी का 'कचनार' उपन्यास इतिहास व परम्परा पर आधारित है। इसे तथ्यपरक बनाने के लिए वर्मा जी ने संसार सागर गजेटियर, भुवन स्वामी के मुकद्दमों, बुंदेली इतिहास, सरकार द्वारा प्रकाशित ग्रंथो एवं मराठी राज्य के विविध विवरणों का बारीकी से अध्ययन किया। इसमें 18वीं शताब्दी के इतिहास का विवरण देखने को मिलता है। 'कचनार' का मुख्य कथानक धमोनी के राजा दलीप सिंह व कचनार नामक एक साधारण नारी की प्रेम कथा पर आधारित है। इसके अलावा गुसाई समाज की दशा, सागर राज्य व पिण्डारियों की शत्रुता की कथायें भी इसमें वर्णित है। कचनार का केन्द्र धमोनी है जो एक समय राजगोंडो की राजधानी हुआ करती थी। कचनार के कथानक के साथ ही राजगोंडो की कहानी भी समान्तर चलती है। दलीप सिंह, कचनार, महन्त अचलपुरी, गुसाई समाज, धमोनी, राजगोंडो के संदर्भ में दिए गये विवरण इतिहास सम्मत है। इसके अलावा धमोनी के किले, बरूआसागर की झील, जंगल, बीहड़, टोरियों तथा बेतवा व धसान जैसी नदियों का भी उल्लेख देखने को मिलता है।

कचनार के पश्चात वर्मा जी का 'मृगनयनी' उपन्यास प्रकाशित हुआ। इसकी विषयवस्तु 1486 से 1516 के बीच हुये ग्वालियर नरेश मानसिंह तोमर व उनकी पत्नी मृगनयनी से सम्बन्धित हैं। उपन्यास में वर्णित सभी मुख्य पात्र व घटनायें इतिहास प्रसिद्ध है। मानसिंह तोमर के अतिरिक्त सिकन्दर लोदी, गयासुद्दीन खिलजी, नासिरूद्दीन खिलजी, महमूद बेगड़ा, राजसिंह व मृगनयनी आदि पात्र ऐतिहासिक है। ग्वालियर पर दिल्ली के सुल्तान सिकन्दर लोदी ने पाँच बार आक्रमण किया किन्तु वह इसे जीतने में असफल रहा। ग्वालियर विजय हेतु ही उसने आगरा नामक नगर बसाया। दूसरी ओर मालवा विलासी सुल्तान गयासुद्दीन खिलजी और गुजरात का महमूद बेगड़ा भी ग्वालियर जीतना चाहते थे किन्तु मानसिंह के शौर्य व पराक्रम के समक्ष उन्हें घुटने टेकने पड़े। इन ऐतिहासिक घटनाओं के अतिरिक्त उपन्यासकार ने प्रसिद्ध संगीतज्ञ बैजू बावरा को मानसिंह का दरबारी संगीतकार बताया है। उसने मानसिंह की गुजरी रानी मृगनयनी के नाम पर 'गूजर टोड़ी' और 'मंगल गूजर' जैसे रागों का सृजन किया।

1955 में प्रकाशित उनका 'अहिल्याबाई' उपन्यास मराठा जीवन से सम्बद्ध ऐतिहासिक उपन्यास है। इसमें एक आदर्श हिन्दू नायिका अहिल्याबाई की जीवन गाथा एवं संघर्ष की

कथा का सजीव चित्रण देखने को मिलता है। अहिल्याबाई इतिहास प्रसिद्ध सूबेदार मल्हारराव होल्कर के पुत्र खाण्डेराव की पत्नी थी। इस उपन्यास में कम आयु में अहिल्याबाई के विधवा होने से लेकर एक के बाद एक उनके सगे सम्बन्धियों के देहावसान से उत्पन्न विकट राजनीतिक परिस्थितियों में रानी द्वारा इन्दौर राज्य के कुशल संचालन का जीवन्त वर्णन किया गया है। मल्हारराव, भारमल व गनपतराय जैसे कई अन्य पात्र भी ऐतिहासिक है।

1957 में प्रकाशित 'माधव जी सिन्धिया' वर्मा जी का विशुद्ध ऐतिहासिक उपन्यास है। इसमें 18वीं शताब्दी के सामाजिक, सांस्कृतिक जीवन के साथ-साथ राजनीतिक रस्साकसी के बीच मराठा वीर माधवजी सिन्धियां द्वारा अंग्रेजो के विरूद्ध भारत की तत्कालीन तमाम शक्तियों को एकजुट करने के प्रयासों का वर्णन किया गया है। वर्मा जी के इस उपन्यास में माधव जी सिन्धियां के व्यक्तित्व को तो भली-भाँति उभारा ही गया है साथ ही साथ पतनशील मुगल बादशाहों की गतिविधियों को तथा उनके वजीरो की स्वार्थ परायणता व षड़यंत्रों, मराठा, जाट, सिख, अफगान आदि के टकराव जैसी तमाम घटनायें एवं गुलाम कादिर, सूरजमल, मल्हार राव आदि पात्रों का भी इतिहास सम्मत् वर्णन इस उपन्यास में देखने को मिलता है।

वर्मा जी के 'टूटे काँटे' नामक ऐतिहासिक उपन्यास में दिल्ली के बादशाह मुहम्मद शाह (रंगीला) के शासनकाल (1719 से 1748) तक की घटनाओं का वर्णन देखने को मिलता है। इसमें एक साधारण जाट सैनिक मोहन की पारिवारिक स्थित के साथ-साथ प्रसिद्ध फारसी गायिका नूरबाई के उत्थान व पतन के जीवन का चित्रण हुआ है। नूरबाई मुहम्मदशाह के दरबार से सम्बद्ध थी। नादिरशाह ने जब दिल्ली पर आक्रमण किया उस समय वह नूरबाई से बहुत प्रभावित हुआ। रंगीला ने चार हजार नर्तकियों के साथ नूरबाई को भी नादिरशाह को भेट किया। नादिरशाह उसे ईरान ले जाना चाहता था किन्तु नूरबाई सैनिक मोहन के सहयोग से उसके चंगुल से भाग निकली। नूरबाई के दिल्ली छोड़ने तक की घटनायें इतिहास सम्मत है।

निष्कर्ष

किसी भी क्षेत्र की लोकसंस्कृति में कुछ महत्वपूर्ण बिन्दु समाहित होते है। जैसे वहाँ की कला एवं स्थापत्य, भौगोलिक विशिष्टतायें, समाजिक- सांस्कृतिक जीवन, भाषा, बोली, त्योहार,

रीति-रिवाज, लोकगीत, लोककथायें इत्यादि। इसके आधार पर ही लोक संस्कृति का समग्र मुल्यांकन किया जा सकता है। डा. वृन्दावनलाल वर्मा बुंदेली लोक संस्कृति के ऐसे चितेरे कालजयी उपन्यासकार है जिन्होने अपने ऐतिहासिक उपन्यासों के माध्यम से अपनी मातृभूमि बुंदेलखण्ड को समग्रता से उभारने का प्रयास किया है। उनके उपन्यासों से मध्यकालीन तथा 18वीं शताब्दी के बुंदेलखण्ड की एक व्यापक तस्वीर उभरती है। इसके लिये जहाँ उन्होंने एक और आधारभूत ऐतिहासिक तथ्यों का अध्ययन व अनुसंधान किया तो वही दूसरी ओर इतिहास के अदृश्य पन्नों को प्रदर्शित व पूरित करने के लिए अनुमान व कल्पनाशक्ति का सार्थक उपयोग किया। जहाँ तथ्यों के अभाव में इतिहास मौन हो जाता है वर्मा जी के ऐतिहासिक उपन्यास वही से बोलना शुरू कर देते है ऐसा कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। इस प्रकार वृन्दवनलाल वर्मा के उपन्यास बुन्देलखण्ड के ऐतिहासिक संरक्षण की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, जिनमें इतिहास के साथ तत्कालीन संस्कृति, भौगोलिक, सामाजिक, राजनीतिक परिवेश, जनजीवन, बोली आदि का संग्रह है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डा.रामेश्वर प्रसाद पाण्डेय/बुंदेलखण्ड संस्कृति और साहित्य/किताबघर प्रकाशन, नईदिल्ली संस्करण 2015
2. वृन्दावनलाल वर्मा/गढ कुण्डार/प्रभात प्रकाशन नईदिल्ली, संस्करण 2008
3. वृन्दावनलाल वर्मा/विराटा की पद्मिनी/प्रभात प्रकाशन, नईदिल्ली, संस्करण 2009
4. वृन्दावनलाल वर्मा/झाँसी की रानी/प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2010
5. वृन्दावनलाल वर्मा/कचनार/प्रभात प्रकाशन, नईदिल्ली, संस्करण 2008
6. वृन्दावनलाल वर्मा/मृगनयनी/प्रभात प्रकाशन, नईदिल्ली, संस्करण 2009
7. वृन्दावनलाल वर्मा/अहिल्याबाई/प्रभात प्रकाशन, नईदिल्ली, संस्करण 2009
8. वृन्दावनलाल वर्मा/माधवजी सिंधिया/प्रभात प्रकाशन, नईदिल्ली, संस्करण 2016
9. बी.के.श्रीवास्तव/बुंदेलखण्ड का इतिहास/डी.के.प्रिंट वर्ल्ड नईदिल्ली, संस्करण 2018
10. डॉ.बच्चन सिंह/आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास/लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण 2012